जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोन:- 256906, 256907, फैक्स:- 01562-256908 वर्ष: 17 संख्या: 182 प्रभात चूरू, गुरुवार, 30 अक्टूबर, 2025 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

# 59 दिनों के बाद बिहार लौटते ही राजनीतिक मंच पर तूफान ला दिया राहुल गांधी ने

## उन्होंने मोदी पर सीधे ही आक्रमण, उपहास और खिल्लियों की भारी वर्षा की झड़ी लगा दी

- मुज़फ्फरपुर रैली में राहुल ने मंच से कहा, मोदी वोटों के लिए कुछ भी कर सकते हैं। यदि उनसे कहा जाए, ड्रामा कीजिए तो वे करेंगे, डांस करिए तो मंच पर आकर डांस करेंगे।
- राहुल ने यह भी कहा कि मोदी ने ड्रामा रचा कि वे छठ पूजा के दिन यमुना में डुबकी लगायेंगे, बाद में मालूम पड़ा, उन्होंने यमुना में नहीं, बल्कि पाइप से पानी लाकर एक छोटी सी तालाबनुमा वॉटर बॉडी बनाई और उसमें डुबकी लगाई।
- भाजपा ने राहुल के इन कटाक्षों और उपहास के प्रयासों को भद्दा व निम्नस्तर की राजनीति की संज्ञा दी, ऐसी भाषा जो राहुल गांधी ने उपयोग में ली, वो असभ्य, अशोभनीय, गुंडों की भाषा है। राहुल गांधी ने उन सभी गरीब जनता का तिरस्कार किया है, जिन्होंने वोट देकर मोदी को प्रधानमंत्री बनाया है।

- श्रीनंद झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर। जिस दिन कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 59 दिन के अंतराल के बाद बिहार लौटकर आज जैसे ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर तीखा और बेबाक हमला बोला, वैसे ही वरिष्ठ भाजपा नेता और केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने लगभग यह संकेत दे दिया कि नीतीश कुमार को एनडीए की ओर से मुख्यमंत्री पद का चेहरा माना जा सकता है।

बिहार के दरभंगा में एक जनसभा को संबोधित करते हुए शाह ने महागठबंधन नेताओं को स्पष्ट संदेश दिया और कहा कि राजनीति में कोई खाली पद नहीं होता है, क्योंकि बिहार में नीतीश कुमार मुख्यमंत्री हैं और केन्द्र में नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने रहेंगे।

हालांकि, इसके बाद समस्तीपुर की दूसरी रैली में शाह ने एक और महत्वपूर्ण बात कही, उन्होंने कहा कि बिहार के पास नीतीश कुमार और चिराग पासवान जैसे नेता हैं, और उन्हें प्रधानमंत्री का आशीर्वाद और समर्थन प्राप्त है।

उधर, लंबे समय तक बिहार से दूर रहने को लेकर एनडीए के हमलों के केन्द्र में रहे राहुल गांधी ने मुजफ्फरपुर की रैली में प्रधानमंत्री पर तीखा हमला करते हुए कहा कि मोदी वोटों के लिए कुछ भी कर सकते हैं। अगर आप मोदी जी से कहें कि वोट पाने के लिए ड्रामा करें, तो वो करेंगे। अगर आप उनसे कहें कि मंच पर आकर नाचें, तो वे वो भी करेंगे।

राहुल के इस बयान पर भाजपा नेताओं ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। पार्टी नेता प्रदीप भंडारी ने कहा कि राहुल गांधी की भाषा स्थानीय गुंडों जैसी है। उन्होंने भारत और बिहार के उन सभी गरीबों का खुला अपमान किया है" जिन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी को वोट दिया है।

राहुल गांधी के बिहार आगमन से राज्य की सियासत में नई हलचल पैदा हो गई है। पिछले 59 दिनों से उनकी गैरहाजिरी को लेकर लगाए गए मिसिंग राहुल गांधी वाले पोस्टरों के बीच, उनके आगमन ने राजनीतिक माहौल को गर्मा दिया है।

इससे पहले, अमित शाह ने बिहार की उप-राष्ट्रीय भावना को साधने की कोशिश करते हुए केन्द्र सरकार के उस फैसले का जिक्र किया, जिसके तहत पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने की घोषणा की गई। उन्होंने दरभंगा

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# राफेल में उड़ान भरी राष्ट्रपति मुर्मू ने

- इससे पहले वे सुखोई विमान से भी उड़ान भर चुकी हैं। दो अलग-अलग लड़ाकू विमानों से उड़ान भरने वाली वे पहली राष्ट्रपति हैं।

अंबाला, 29 अक्टूबर। तीनों सेनाओं की सर्वोच्च कमांडर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बुधवार को यहां वायु सेना के अंबाला स्टेशन से अत्याधुनिक लड़ाकू विमान राफेल में उडान भरने के बाद इसे अविस्मरणीय अनुभव करार दिया और कहा कि उन्हें देश की रक्षा क्षमताओं पर गर्व है। राष्ट्रपति मुर्मू इससे पहले सुखोई-30 लड़ाकू विमान में भी उड़ान भर चुकी हैं। दो अलग-अगल लड़ाकू विमानों में उडान भरने वाली वह देश की पहली राष्ट्रपति तथा लड़ाकू विमान में उडान भरने वाली दूसरी महिला राष्ट्रपति हैं। मुर्मू ने सात अप्रैल 2023 को वायु सेना के तेजपुर स्टेशन से सुखोई विमान में उड़ान भरी थी। इससे पहले पूर्व राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल और पूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम भी सुखोई लड़ाकू विमान में उड़ान भर चुके हैं। राष्ट्रपति ने राफेल में लगभग 30 मिनट तक उड़ान भरी और लगभग 200 किलोमीटर की दूरी तय की। इस विमान ने समुद्र तल से लगभग 15000 फुट की उंचाई पर और लगभग 700 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से उड़ान भरी। इसे 17 स्क्वाड्रन के कमांडिंग ऑफिसर ग्रुप कैप्टन अमित गेहानी उड़ा रहे थे।

# पाकिस्तान की तालिबान नीति इतनी बुरी तरह असफल क्यों हुई

## पाकिस्तान को आशा थी कि अफगानिस्तान में तालिबान के नेतृत्व वाली सरकार पाकिस्तान के हितों की रक्षा व सुरक्षा प्रदान करेगी

- पर यह हुआ हमदम उलटा ही, पाकिस्तान विरोधी ग्रुप, तहरीक-ए-तालिबान आदि पर तालिबान सरकार ने किसी प्रकार का अंकुश नहीं लगाया तथा पनपने की पूर्ण आज़ादी दी और यह ग्रुप पाकिस्तान जाकर अपनी आतंकवादी गतिविधियों से तहलका मचा रहा है।
- अब तालिबान, पाकिस्तान का एक स्वतंत्र पड़ोसी बन गया है और किसी भी कीमत पर अपनी सार्वभौमिकता को दाँव पर लगाने को तैयार नहीं है।
- इसका नतीजा यह हुआ कि पाकिस्तान अपनी अफगानिस्तान पर सोच व नीति बदलने को मजबूर हो रहा है।

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर। पाकिस्तान की लंबे समय से चली आ रही "तालिबान रणनीति", जिसका उद्देश्य अफगानिस्तान में अपना दबदबा स्थापित करना और अपनी सीमा की सुरक्षा करना था, अब पूरी तरह से विफल होती नजर आ रही है। दशकों तक, इस्लामाबाद ने यह नीति अपनाए रखी, इस उम्मीद में कि काबुल में तालिबान की एक मित्रवत सरकार पाकिस्तान को उसकी पश्चिमी सीमा पर सुरक्षा प्रदान करेगी और पाकिस्तान विरोधी समूहों, जैसे कि तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान का दमन करने में मदद करेगी। तालिबान के उदय का समर्थन करके या उसे सहन करके, पाकिस्तान मानता था कि वह यह सुनिश्चित कर सकता है कि अफगानिस्तान उस पर निर्भर रहेगा, भारत के प्रभाव के खिलाफ एक बफर स्टेट के रूप में काम करेगा, और डूरंड लाइन के साथ सीमा प्रबंधन में सहयोग करेगा।

हालांकि, तालिबान के अगस्त 2021में सत्ता में लौटने के बाद से रणनीति बिगड़ने लगी। पाकिस्तान ने उम्मीद की थी कि काबुल में तालिबान सरकार द्वारा अफगान भूमि में स्थित तहरीके तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के ठिकानों के खिलाफ कार्रवाई करेगी। इसके बजाय, तालिबान नेतृत्व ने या तो आँखें मूंद लीं या चुपचाप इन समूहों को सुरक्षित पनाहगाह प्रदान कर दी। पाकिस्तान में टीटीपी द्वारा हमले बढ़ गए, विशेष रूप से खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान में, जिससे

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# भाजपा पर भारी दबाव है नीतीश को एनडीए का "सीएम फेस" घोषित करने का

## भाजपा के अंदरूनी सूत्रों के अनुसार, जद (यू) समर्थकों को शांत करने के लिए मोदी खुद नीतीश को मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित कर सकते हैं। ऐसा करके वे अमित शाह के रुख को वीटो कर सकते हैं

- रिपोर्ट्स कहती हैं कि जब से शाह ने कहा कि नए विधायक सीएम चुनेंगे तब से चुनाव प्रचार अभियान में जद (यू) कार्यकर्ता के नेता शामिल नहीं हो रहे हैं और ऐसी भी खबरें हैं कि विरोध जताने के लिए मोदी की 30 अक्टूबर की सभा में नीतीश शामिल नहीं होंगे।
- शाह भी इस तनाव को भांप गए हैं, उन्होंने विवाद पर ठंडे छींटें देने का प्रयास किया व कहा, सीएम तथा पीएम का पद खाली नहीं है, दिल्ली में मोदी जी हैं और बिहार में नीतीश जी हैं।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इस राजनीतिक दुविधा में है कि बिहार में नीतीश कुमार को राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का अगला मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार घोषित किया जाए या नहीं।

पहले चरण के मतदान में अब सिर्फ एक हफ्ता बाकी है, ऐसे में जनता दल (यूनाइटेड) समर्थकों के बढ़ते दबाव और गठबंधन के भीतर की उलझनों ने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को अपनी रणनीति पर फिर से विचार करने के लिए मजबूर कर दिया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, जो आने वाले दिनों में बिहार में कई चुनावी रैलियां करने वाले हैं, से उम्मीद की जा रही है कि वे नेतृत्व के मुद्दे पर कोई अहम घोषणा कर सकते हैं।

पार्टी के वरिष्ठ सूत्रों के अनुसार, मोदी जदयू कार्यकर्ताओं में बढ़ती बेचैनी को कम करने और गठबंधन की एकता का संकेत देने के लिए नीतीश कुमार को औपचारिक रूप से एनडीए का मुख्यमंत्री पद का चेहरा घोषित कर सकते हैं।

भाजपा की चुनाव टीम से जुड़े सूत्रों ने माना है कि कई विधानसभा क्षेत्रों में

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# डिप्टी सीएम के खिलाफ झूठी खबरें: आरोपियों को अग्रिम जमानत नहीं मिली

- डिप्टी सीएम के निजी सहायक ने सायबर पुलिस में रिपोर्ट की थी कि आरोपी यू-ट्यूब व वैब पोर्टल पर झूठी खबरें सीरीज़ में चला रहे हैं।

जयपुर, 29 अक्टूबर। जयपुर मेट्रो-प्रथम की एडीजे कोर्ट-6 ने डिप्टी सीएम दिया कुमारी के खिलाफ एक यू-ट्यूब चैनल व वेब पोर्टल पर झूठी व भ्रामक खबरें चलाने के आरोपी आनंद पांडे, हरीश दिवेकर व जीनेश कुमार की अग्रिम जमानत अर्जी बुधवार को खारिज कर दी। कोर्ट ने कहा कि मामले में लगाए आरोप गंभीर हैं और केस का अनुसंधान बाकी है। ऐसे में इस स्तर पर आरोपियों को अग्रिम जमानत नहीं दे सकते।

जमानत अर्जियों में कहा गया था कि उन पर लगाए गये आरोप झूठे व गलत हैं। पुलिस ने परिवादी से

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# आखिर क्यों चिराग भी अंतिम क्षणों में चुनाव मैदान से हट गए

## जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर के बाद चिराग के भी चुनाव मैदान से हटने पर भारी अटकलें लगाई जा रही है

- चिराग और प्रशांत दोनों ने बिहार में जोरदार अभियान चलाया और अपने-अपने मुख्य प्रतिद्वंदी, क्रमशः नीतीश और तेजस्वी को घेरने में उन्हें किसी हद तक सफलता भी मिली।
- चिराग ने कहा था कि वे अवश्य चुनाव लड़ेंगे और किशोर ने तो तेजस्वी के मुकाबले चुनाव लड़ने का मन बनाया था फिर आखिर क्या हुआ, दोनों ही पीछे हट गए।
- विशेषज्ञों का कहना है कि किशोर जान गए थे, उनकी पार्टी चुनावों में खराब प्रदर्शन कर रही है, इसलिए वे चुनाव नहीं लड़ रहे हैं। वहीं चिराग पासवान को शायद भाजपा ने शांत बैठने की हिदायत दी है।

- जाल खंताता -
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर। दो प्रमुख युवा नेताओं ने बिहार विधानसभा चुनावों में अपनी पार्टी का नेतृत्व करने का इरादा घोषित करने के बाद, आखिरी वक्त में चुनावी मैदान में उतरने से मना कर दिया। ये नेता हैं लोक जनतांत्रिक पार्टी (एलजेपी) के नेता चिराग पासवान और जन सुराज पार्टी के प्रशांत किशोर।

पासवान (42) और किशोर (47) दोनों खुद को मुख्यमंत्री पद का उम्मीदवार मानते हैं और दोनों "पहले बिहार" के उच्चस्तरीय अभियान के साथ नीतीश कुमार की (जेडीयू) और लालू-तेजस्वी यादव की (आरजेडी) को अपनी राजनीतिक यात्रा के लिए चुनौती के रूप में देखते हैं।

पासवान भाजपा के समर्थन से मुख्यमंत्री बनने के आकांक्षी हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि नीतीश कुमार और लालू प्रसाद, जो पिछले 35 वर्ष से बिहार की राजनीति पर छाये हुये थे, अब अपने राजनीतिक जीवन के अंतिम चरण में हैं।

किशोर भी बिहार की राजनीति में एक संभावित शून्य देख रहे थे और उनका मानना था कि वे तेजस्वी यादव, जो लालू के उत्तराधिकारी हैं, को चुनौती दे सकते हैं।

जून में एलजेपी प्रमुख ने घोषणा की थी कि वे बिहार चुनाव में हिस्सा लेंगे और जेडीयू और भाजपा के गठबंधन में होने के बावजूद, उन्होंने नीतीश के गढ़ों में रैलियां की थीं। इस संभावना का पहला संकेत उनके साले अरुण भारती, सांसद, ने "एक्स" पर एक पोस्ट के माध्यम से दिया था।

जून-जुलाई में आरा और सारण में अपनी रैलियों में, पासवान ने स्पष्ट रूप से कहा था कि वे चुनाव लड़ेंगे, क्योंकि वे बिहार को नई ऊंचाइयों तक ले जाना चाहते हैं, और उन्होंने अपनी "बिहार पहले, बिहारी पहले" की नीति को प्रमुखता से बताया। जेडीयू को पासवान के कदमों पर संदेह था, और नीतीश इस बात से नाराज़ थे कि एलजेपी को उनके हिस्से की कुछ सीटें दी गईं।

लेकिन सूत्रों का कहना है कि जैसे-जैसे चुनाव नज़दीक आए, पासवान को यह सलाह दी गई कि वे एनडीए में संकट न पैदा करें, क्योंकि जेडीयू यह नहीं भूल सकता था कि एलजेपी ने 2020 में 137 सीटों पर चुनाव लड़ा था तथा कई सीटों पर उसकी संभावनाओं को "जानबूझकर" नुकसान पहुँचाया गया था। पासवान ने अपनी पार्टी के लिए 29 सीटें हासिल कर लीं, जिसे कुछ लोग यह मानते हैं कि यह उनकी पार्टी के

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# एक कमरे में 38 वोटर- आदित्य ठाकरे ने वोट चोरी का खुलासा किया

- आदित्य ठाकरे ने कहा अगर एक कमरे में 38 मतदाता दिखाए जा सकते हैं तो ईमानदारी कहां रही यह तो वोट चोरी है।

मुंबई, 29 अक्टूबर। महाराष्ट्र की सियासत में एक नया बवाल खड़ा हो गया है। शिवसेना (उद्धव ठाकरे गुट) के नेता आदित्य ठाकरे ने राज्य चुनाव आयोग पर तीखे सवाल उठाते हुए वोट चोरी का मुद्दा उठाया था. उन्होंने ठीक उसी तरह प्रेस कांफ्रेंस की थी, जैसा कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कुछ दिनों पहले की थी और दावा किया कि मुंबई के वर्ली विधानसभा क्षेत्र में एक ही कमरे के पते पर 38 से ज्यादा मतदाताओं के नाम दर्ज हैं! इस सनसनीखेज खुलासे के बाद राज्य

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# आसियान शिखर सम्मेलन में भाग लेने मोदी मलेशिया क्यों नहीं गए

## जानी-मानी न्यूज़ एजेंसी ब्लूमबर्ग के अनुसार, मोदी किसी भी तरह ट्रंप से रुबरु मिलने को टालना चाहते थे

- आशंका बनी हुई थी, विदेश मंत्रालय में, कि ट्रंप एक बार फिर मोदी से रुबरु मिलने पर फिर दोहराते कि उनकी निर्णायक भूमिका थी, भारत-पाकिस्तान युद्ध रूकवाने में।
- हालांकि, भारत कई बार ट्रंप के इस दावे को पूर्णतः असत्य बता चुका है। ट्रंप यदि रुबरु यह बोलते तो आमना-सामना हो जाता, जो कूटनीति की दृष्टि से भारत के विरुद्ध जाती।
- मोदी का चुप रहना, ट्रंप के दावे के प्रत्युत्तर में, या कोई अभद्र टिप्पणी करना राजनीतिक दृष्टि से बिहार चुनावों के दौरान काफी जोखिम भरा काम था।

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 29 अक्टूबर। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप से मुलाकात और पाकिस्तान पर संभावित चर्चा से बचने के लिए इस सप्ताह मलेशिया में हुए आसियान शिखर सम्मेलन में हिस्सा नहीं लिया और इससे कांग्रेस नेता राहुल गांधी को इस बात को हवा देने का मौका मिल गया।

ब्लूमबर्ग ने मामले से वाकिफ लोगों के हवाले से बताया कि अधिकारियों को इस बात की चिंता थी कि ट्रंप भारत और पाकिस्तान के बीच मई में हुए चार दिनों के सैन्य संघर्ष के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता करने के अपने दावे को दोहरा सकते हैं।

हालांकि भारत ने हमेशा इस बात को नकारा किया है कि ट्रंप ने संघर्ष विराम में कोई भूमिका निभाई थी, लेकिन जिन लोगों को घटनाओं की जानकारी थी, उनका कहना था कि प्रधानमंत्री मोदी, जो विदेश यात्रा करना पसंद करते हैं, आमतौर पर मलेशिया जाने का मौका छोड़ते नहीं हैं। ट्रंप, जो किसी भी असहमत नेता के प्रति अपने अपमानजनक व्यवहार के लिए जाने जाते हैं, वो मोदी के मुँह पर कुछ भी कह सकते थे। ट्रंप से आमने - सामने मिलने का डर मोदी द्वारा शिखर सम्मेलन को वर्चुअली संबोधित करने का एक कारण हो सकता है।

कुआलालंपुर में आसियान शिखर सम्मेलन से मोदी की अनुपस्थिति परंपरा से बिल्कुल अलग थी। 2014 के बाद से, उन्होंने हर शिखर सम्मेलन में भाग लिया है, सिवाय 2022 के, जबकि 2020 और 2021 के संस्करण महामारी के कारण वर्चुअली आयोजित किए गए थे।

भारत और अमेरिका के बीच रिश्ते पाकिस्तान संघर्ष के पांच महीने बाद से खराब हो गए हैं। अगस्त में, ट्रंप ने भारतीय निर्यात पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाया, जिनमें से आधे शुल्क भारत द्वारा रूसी तेल की निरंतर खरीद के लिए एक दंड के रूप में लगाए गए थे। तब से व्यापार वार्ताएँ चल रही हैं और कोई स्पष्ट सफलता दिखाई नहीं दे रही है।

एक सूत्र ने ब्लूमबर्ग को बताया कि रिपोर्ट के अनुसार, मोदी की टीम को मलेशिया में ट्रंप के साथ द्विपक्षीय बैठक से कोई खास लाभ नहीं दिख रहा था। पिछले सप्ताह दोनों नेताओं के बीच एक फोन कॉल "नई दिल्ली की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा।"

केंद्रीय विदेश मंत्रालय ने ब्लूमबर्ग की टिप्पणी के अनुरोध का जवाब नहीं दिया।

ब्लूमबर्ग के सूत्रों ने कहा, मोदी अगले सप्ताह शुरु होने वाले महत्वपूर्ण बिहार चुनावों में भाजपा के अभियान का नेतृत्व कर रहे हैं, ऐसे में मोदी के सहायकों का मानना था कि ट्रंप से एक संभावित विवादास्पद मुलाकात राजनीतिक रूप से उल्टी पड़ सकती है।

रिपोर्ट में कहा गया कि अमेरिका के राष्ट्रपति की तरफ से कोई भी विवादास्पद टिप्पणी, खासकर पाकिस्तान के बारे में, विपक्ष द्वारा उठाई जा सकती थी।

ट्रंप ने बार-बार यह दावा किया है कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच शत्रुता समाप्त करने में मदद की और यहां तक कि यह सुझाव दिया है कि उन्हें उस संघर्ष और अन्य संघर्षों को हल करने में भूमिका के लिए नोबेल शांति पुरस्कार मिलना चाहिए। इस सप्ताह उनकी मलेशिया यात्रा में थाईलैंड और कंबोडिया के बीच एक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।

मंगलवार को ट्रंप ने फिर से भारत-पाकिस्तान संघर्ष विराम में अपनी भूमिका पर जोर दिया। टोक्यों में एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा, "मैंने प्रधानमंत्री मोदी से कहा, आप बहुत अच्छे इन्सान हैं और पाकिस्तान में फील्ड मार्शल से भी कहा, "देखो, अगर तुम लड़ाई करोगे तो हम कोई व्यापार नहीं करेंगे।"

किसी समय एक-दूसरे के करीबी सहयोगी माने जाने वाले मोदी और ट्रंप के रिश्ते अब घरेलू आलोचना का शिकार बन चुके हैं।

लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर पोस्ट किया, "ट्रंप एक के बाद एक मोदी का अपमान कर रहे हैं। सबसे ताजा मामला दक्षिण कोरिया का है।"

राहुल गांधी ने लिखा, "ट्रंप ने दोहराया कि उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर रोकने के लिए व्यापार का इस्तेमाल किया।"

उन्होंने पीएम पर अक्सर किया जाने वाला तंज भी कसा: "डरो मत मोदी जी, जवाब देने का साहस जुटाओ।"

मोदी और ट्रंप के बीच तनाव जून में 35 मिनट की एक कॉल के बाद सामने आया, जिसमें संघर्ष पर चर्चा हुई थी, जैसा कि ब्लूमबर्ग ने पहले रिपोर्ट किया था।

मलेशिया जाने के बजाय, मोदी ने रविवार को आसियान शिखर सम्मेलन को वर्चुअली संबोधित किया।

सूत्रों ने ब्लूमबर्ग को बताया कि आगामी महीनों में यदि व्यापार वार्ताओं में कोई प्रगति होती है, तो मोदी-ट्रंप की बैठक हो सकती है।

# अयोध्या की चौदह कोसी परिक्रमा शुरु

- श्रद्धालुओं ने मुहुर्त से पहले ही परिक्रमा शुरु कर दी। मुहुर्त 30 अक्टूबर सुबह 4.43 का था।

अयोध्या, 29 अक्टूबर। अयोध्या की पौराणिक चौदह कोसी परिक्रमा को शुरू करने का श्रद्धालुओं के लिए शुभ मुहूर्त आज की रात्रि के अंतिम पहर, अर्थात 30 अक्टूबर को प्रातः चार बजकर 43 मिनट से हैं, लेकिन उत्साही श्रद्धालुओं ने इसकी चिंता किए बिना जय राम के गगनभेदी जयकारों के साथ चौदह कोसी परिक्रमा शुरू कर दी है।

परिक्रमार्थियों को परिक्रमा करने के दौरान कोई कष्ट न हो, इसके लिए जिला प्रशासन ने चुस्त-दुरुस्त व्यवस्था की है। परिक्रमा पथ पर जगह-जगह विश्राम स्थल बनाए गये हैं, जहां परिक्रमार्थियों के लिए बैठने की व्यवस्था है। प्रशासन ने पर्याप्त संख्या में चिकित्सा शिविर और सूचना केन्द्र भी स्थापित किया है।